अनाग्रह से सच्चाई को प्राप्त किया जा सकता है : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 22 मार्च।

''उस व्यक्ति को पछताना पड़ता है जो आग्रही होता है। आग्रह कि किसी एक बात को पकड़ लिया और व्यक्ति उसे छोड़ना नहीं चाहता तो उसे पछताना पड़ता है जो व्यक्ति अनाग्रह को जानता वह आग्रह नहीं करता।''

उक्त विचार आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवासमवरण में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि दुनिया में बहुत ज्ञान है और अनेक सच्चाईयां, सत्य है कि यदि कोई आदमी आग्रह में रहे तो वह सच्चाई को ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता। आग्रह और जिद्द आदमी को सत्य से दूर ले जाते हैं और उसे पछताना भी पड़ता है।

आचार्यश्री ने कहा कि सत्य की खोज और अनाग्रह जहां ये दोनों होते हैं वहां अनेकों सच्चाइयां मिलती रहती है। जहां केवल आग्रह है और सत्य की खोज नहीं है तो फिर वहां कुछ मिल नहीं सकता। जैन दर्शन के दो बड़े तत्त्व है जो भगवान महावीर का एक वचन जिसका प्रेक्षाध्यान में प्रयोग करते हैं ''स्वयं सत्य खोजो'' सत्य को खोजते रहो संतुष्ट मत बनो कि मैंने बहुत पा लिया, बहुत जान लिया। ज्ञान का बड़ा महासागर पड़ा है जानने के लिए अगर यह भावना रहे तो नये-नये ज्ञान का विकास हो सकता है, अगर यह भावना न हो और केवल आग्रह की बात हो जाए तो फिर सत्य प्राप्त नहीं हो सकता।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि शरीर के द्वारा धर्म की साधना होती है तो शरीर पाप का साधन भी बन जाता है। शरीर एक नौका के समान है और जीव नाविक है। संसार समुद्र में शरीर रूपी नौका के द्वारा महर्षि, साधक लोग संसार समुद्र से तर जाते हैं तथा पार हो जाते हैं। शरीर रूपी नौका यदि छिद्र वाली होती है तो फिर वह डूबोने वाली भी बन जाती है, बिना छिद्र वाली नौका है तो पार लगाने वाली भी हो सकती है।

युवाचार्यप्रवर ने भोजन का भी संयम करने की चर्चा करते हुए कहा कि व्यक्ति का भोजन संयमित होना चाहिए, ऐसा भोजन नहीं करना चाहिए जिससे काम शक्ति को बढ़ावा मिले। जिस व्यक्ति में संयम और संतोष की चेतना जाग जाती है तो वर्तमान की कई समस्याओं का समाधान भी मिल सकता है।

- अशोक सियोल

99829 03770